अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का यथार्थवादी सिद्धान्त

यथार्थवादी दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को एक सैद्धान्तिक एवं वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। इस विचार के निर्माता मार्गेन्थो है। यथार्थवाद अनुभव और तर्क पर टिका है। मार्गेन्थो के अनुसार- "वास्तविक तथ्यों तथा उनके परिणामों की तर्कसंगत परिकल्पना के आधार पर परीक्षण द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के तथ्यों का अर्थ मिलता है।" (केनेन नीबुहर समर्थक है)

* यथार्थवादी उपागम के अनुसार अन्त० राज० शक्ति के लिए संघर्ष है राष्ट्रों के हितों की सुरक्षा केवल शक्ति प्रयोग पर निर्भर है।
  मार्गेन्थो के अनुसार - "अन्तर्राष्ट्रीय राज० अन्य सभी राजनीतियों की तरह शक्ति के लिए संघर्ष है।"

* अभी तक के यूनानी लेखकों के अमूर्त विचार व मैकियावेली के तात्कालिक लाभ सिद्धान्त से यह सिद्धान्त अलग है। लॉक द्वारा प्रतिपादित अनुभववाद दर्शन एम्पिरिसिज्म का

* शान्ति व युद्ध दोनों मानव स्वभाव की विशेषताएं - इसके समर्थक मैकियावली ने किया क्योंकि यथार्थवादियों के अनुसार- "प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि दूसरा व्यक्ति हमेशा उसे मारने या नष्ट करने का प्रयत्न कर रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप उसे हमेशा / हर समय अपनी रक्षा के कारणों दूसरे व्यक्तियों को मारने / नष्ट करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

* राष्ट्रों मे परस्पर विरोध एवं संघर्ष किसी न किसी अवस्था में सदैव विद्यमान — राज्य कर्ता है, उसका उद्देश्य राष्ट्रीय हित व इसको प्राप्त करने हेतु शक्ति की बैसाखी का सहारा अति आवश्यक -

* विरोध व संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शाश्वत नियम - आदर्शवादियों के विपरीत - इनके मतानुसार विरोध व संघर्ष अन्तर्रा० राज० की आकस्मिक घटना

* शक्ति की होड़ मे अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अंकुश नही -

* शक्ति एक स्थायी तत्व -

* राष्ट्र द्वारा नैतिक नियमों पर चलना मात्र दिखावा - सच्चाई नही - मार्गेन्थो

* केनन का झुकाव सापेक्ष की ओर, मैकियों का झुकाव सर्वकालीन यथार्थवाद -

यथार्थवाद के आधारभूत सिद्धान्त - (1) मनुष्य स्वभाव सदैव से झगड़ालू व स्वार्थी - अतिरिक्त

(2) व्यक्ति के प्रकृति का केन्द्रीय तत्व - शक्ति का लालच

(3) शक्ति की लालसा सदैव बरकरार - "मानव हमेशा शक्ति के लिए उसके पीछे दौड़ता रहा, दौड़ता है और दौड़ता रहेगा।

(4) शक्ति का संघर्ष स्थायी तत्व - अटल और अमर विशेषता

(5) शक्ति राष्ट्रहितों को पूरा करने का एक मात्र साधन -

(6) आत्म-परीक्षण - शक्ति का सदैव परीक्षण - -

(7) शक्ति के प्रदर्शन का समय-2 पर प्रयोग - "नो शक्ति, नो राष्ट्र - No Shakti, No state" - Ruthi

Scanned with CamScanner

(8) शक्ति स्वयं शान्ति स्थापना हेतु आवश्यक - शक्ति सन्तुलन, कूटनीतियाँ, सन्धियाँ आदि

महेन्द्र कुमार के अनुसार - "यथार्थवादियों की मूल परिकल्पना यह है कि राष्ट्रों के मध्य परस्पर किसी न किसी रूप में - - - कलह होती है जो मात्र दुर्घटना ही नहीं बल्कि स्वाभाविक होती है।" अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति क्या है? उत्तर में यथार्थवादियों के अनुसार - राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति के लिए कार्य करना।

आलोचनात्मक मूल्यांकन - (1) आदर्शवादी शक्ति के विरुद्ध - इतिहास का स्थायी तत्त्व

(2) यथार्थवादी राष्ट्रवाद, युद्ध व विनाश के समर्थक - जबकि आदर्शवादी - अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सद्भावना के समर्थक

(3) नैतिकता को महत्त्वहीन मानना उचित नहीं -

(4) शक्ति तथा सत्ता का परिमापन करना असम्भव -

(5) संघर्ष व विरोध ही मानव की प्रवृत्तियाँ नहीं, मानव स्वभाव में सहयोगी प्रवृत्ति भी विद्यमान

संक्षेप में कहें - वर्तमान परिस्थितियों जैसा कि सम्पूर्ण राष्ट्रों में शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्धा विद्यमान है, व मानवता को भूलकर उन्हीं के नाश का सामान (परमाणुबम) को बढ़ावा देना यथार्थवादी दृष्टिकोण को सार्थक करता है, प्रत्येक राष्ट्र, आर्थिक, पर्यावरणीय राजनीतिक स्थिरता को दरकिनार कर, मात्र सैनिक शक्ति की प्रबलता को बढ़ा रहा है जैसा कि पाकिस्तान आदि।

परन्तु विश्व राष्ट्रों में सिर्फ संघर्ष ही नहीं U.N.O के निर्देशों में नयी आर्थिक नीति, पर्यावरणीय मुद्दों पर विभिन्न सम्मेलन, राजनीतिक स्थिरता हेतु मानवाधिकारों का प्रयास यह सार्थक करता है कि विश्व में शान्ति व सहयोग ही स्थित व निरपेक्ष तत्त्व है सम्पूर्ण राष्ट्र एक विश्व एक village की संकल्पना यथार्थवाद को झुठलाती है।

Scanned with CamScanner